आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2619 • उदयपुर, शुक्रवार 25 फरवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

बीदर (कर्नाटक), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत् कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 6 फरवरी 2022 को पन्नालाल हिरालाल शिशण संस्था में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्री भगवत जी खुबा माननीय मंत्री भारत सरकार रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 37, कृत्रिम अंग वितरण 24, कैलिपर माप वितरण 09, बचे हुए कृत्रिम अंग 03, बचे हुए केलीपर 02 की सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् राजकुमार जी अग्रवाल (अध्यक्ष अग्रवाल समाज), अध्यक्षता श्रीमान् नागराज जी करपुर (इंजीनियर), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् अमर जी हिरेमत (सहायक केन्द्रीय मंत्री), श्री ब्रिजकिशोर जी मालाली (मंत्री, संस्था), श्रीमान् पुनीत जी बलवीर (गुरुद्वारा समिति सदस्य) रहे।

शिविर टीम में श्री हरिप्रदसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी (सहायक), श्री किशन जी सुथार पटेल (टेक्नीशियन) ने भी सेवायें दी।

होशंगाबाद, (मध्यप्रदेश), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत् कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 13–14 फरवरी 2022 को अग्निहोत्री गार्डन सदर बाजार , होशंगाबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता रोटरी क्लब, होशंगाबाद रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 342, कृत्रिम अंग माप 134, कैलिपर्स माप 34, की सेवा हुई तथा 27 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री अवधेश प्रताप सिंह जी (सचिव, मध्यप्रदेश विधानसभा), अध्यक्षता कर्नल श्री महेन्द्र जी मिश्रा (रोटरी मण्डलाध्यक्ष 3040), विशिष्ट अतिथि श्री जिनेन्द्र जी जैन (इलेक्ट मण्डलाध्यक्ष 2022–23), श्री नरेन्द्र जी जैन (डिस्ट्रिक्ट ट्रेनर 3040), श्रीमती रितु जी ग्रोवर (नामिनी मण्डलाध्यक्ष 2023–24), श्री धीरेन्द्र जी दत्ता (पूर्व मण्डलाध्यक्ष), श्री गजेन्द्र जी नारंग (पूर्व मण्डलाध्यक्ष), श्री आशीश जी अग्रवाल (अध्यक्ष, आयोजन समिति), श्री प्रदीप जी गिल (अध्यक्ष, रोटरी क्लब) रहे।

डॉ. रामकृपाल जी सोनी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), सुश्री नेहा जी (पी.एन.डो.), श्री किशन जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी अग्निहोत्री (शिविर प्रभारी), श्री बजरंग जी, श्री गोपाल जी (सहायक), श्री अनिल जी (विडियो एवं फोटोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

उमेश की दो साल से रुकी जिन्दगी शुरु

चोरी–चोरा, गोरखपुर (यू.पी.) निवासी 27 वर्षीय उमेश कुमार राजभर करीब 2 साल पहले एक रेल दुर्घटना के शिकार हो गए। दुर्घटना का जिक्र करते हुए वे रूंधे गले से बताते हैं कि मां–पिता की मौत तो मेरे लड़कपन में हो गई थी। खैर ईश्वर की मर्जी के आगे किसी की नहीं चलती। भाभी और भाई ने मुझे बड़ा कर किया। परिवार की मदद के लिए लोहे के कारखाने में मजदूरी करने लगा। घरवालों से मिलने के लिए गांव जा रहा था कि चलती ट्रेन में चढ़ते वक्त गिर पड़ा। मुझे तो कुछ सुध नहीं रही बांया पांव पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। किसी ने मुझे हॉस्पीटल पहुंचाया। वहां करीब 1 माह तक इलाज चला जिसके दौरान घुटने के नीचे से पांव काटना पड़ा। कल तक दौड़ रही जिन्दगी एकाएक थम गई। बेड पर बैठे रहने के सिवा कुछ भी नहीं कर सकता। कुछ दिन पहले किसी परिचित ने नारायण सेवा संस्थान की जानकारी दी तो मैं 4 जनवरी को उदयपुर पहुंचा। संस्थान की प्रोस्थेटिक टीम ने कटे पांव का मेजरमेंट लिया और कृत्रिम पांव लगा दिया। अब मैं अपने पांवों पर चलने लगा हूं। मै इतना खुश हूं कि कह नहीं पा रहा .... बस इतना ही कहूंगा कि मेरी जिन्दगी रूक गई थी जिसे फिर से शुरू करने वाली नारायण सेवा संस्थान और इनके डॉक्टर्स व टीम को बहुत धन्यवाद ... आपने कृत्रिम अंग का मुझे उपहार दिया है ... मैं इसके लिए बहुत आभारी रहूंगा....

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

ये कथा अपने परिवार में अपने जीवन में उतारने की कथा जब हम बोलते हम सुधरेंगे युग सुधरेगा। बार–बार मन में आता है क्या मैं सुधर पाया ? क्या मेरा विकास हुआ ? क्या मेरी ईर्श्या, द्वेश कम हुए ? क्या मेरा गर्व कम हुआ? यदि आपके प्रश्न का उत्तर हाँ में मिले। तो समझ लीजियेगा केवट ने जैसे चरण धोये थे भगवान श्रीराम के चरणों को पखार रहा था, और अपने माथे पर छिड़का था, और चरणामृत का पान किया था। और अपने पितरों को तार दिया था ऐसे ही केवट से प्रेम की शिक्षा ले लेवें। गंगा जी का वर्णन रामचरित मानस के पूर्व के प्रंसग में विश्वामित्र जब राम भगवान लक्ष्मण भगवान को लेकर अयोध्या पधारते है। तब कहा था राम आप के पुरखे गंगा जी लाये। आज मैं सुबह कमला जी को कह रहा था। मेरे इस प्रश्न का उत्तर दो भगवान राम के पुरखे। सूर्य भगवान के कुल में, सूर्यकुल में तो उन्होंने कहा भगीरथ जी लाये थे। इसलिए कहते है भागीरथ प्रयास किया।

गुरुजी – कहते भागीरथ प्रयास करो। मैं कोई कसर नहीं छोडूंगा। मेरे परिवार में एकता रखने के लिए भाइयों में प्रेम स्नेह रखने के लिए माता–पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए पूरा प्रयास करूंगा। अपने पितरों को श्रद्धाजंलि देने का सबसे उत्तम तरीका है अपने पुत्र–पौत्रों को शिक्षित और संस्कारित कर देवें। ऐसे अपने पितरों को श्रद्धाजंलि दूंगा। जैसे संत एकनाथ जी ने 21 पीढ़ी के पितरों को श्रद्धाजंलि दे दी थी। जब गरीबी अमीरी की खाई को पाट करके भूखे बच्चों को उन्होंने भोजन करवा दिया था। जब भूखे बच्चों ने कहा देशी घी की मिठाई बन रही है पिताजी तीन दिन के भूखे हैं। बहुत सुगन्ध आ रही। बोले चुप रह बेटा ये अमीरों के लिए है। ये तो तथाकथित बुद्धिजीवियों के लिए है। ये बहुत ज्यादा पढ़े लिखों के लिए है। और एकनाथ जी ने जब सुन लिया, तो उनको बुलाकर के भोजन करवाया। और शाम को तथाकथित बुद्धिजीवियों ने कहा अरे ! ये स्थान तो अपवित्र हो गया। कैसे अपवित्र हो गया ? जब एक तरफ कहते हैं सबका मालिक एक परम् पिता है। फिर ये जात–पात के बन्धनों में बंधकर के अपने आपको कलंकित कर दिया हम लोगों ने। रामचरित मानस में आपने बहुत बार श्रवण लाभ लिया है। गोस्वामी महाराज जी ने तो लिख दिया था स्वान्तः सुखायः तुलसी रघुनाथ गाथा। ये तुलसी ने हुलसी के बेटे ने चित्रकूट के पास बादा गाँव। अब तो जिला बन गया है।

संस्थान का धन्यवाद

झालावाड़ के रहने वाले नरेन्द्र कुमार मीणा ने एक्सीडेंट में भले ही अपना पांव खो दिया हो लेकिन जिदंगी में आगे बढ़ने का हौसला पूरी तरह कायम है। वे कहते हैं– मैं नरेन्द्र कुमार मीणा हूँ मैं झालावाड़ राजस्थान का रहने वाला हूँ। मैं दोस्त के साथ कहीं जा रहा था और रास्ते में अचानक डिवाईडर से टकराने के कारण मेरा पैर कट गया।

मैंने टी. वी में नारायण सेवा संस्थान का नाम सुना था। मैं मेरे भाई के साथ यहां आया। आज यहां पे नारायण सेवा संस्थान में मेरा पैर लगाया गया है। इससे अब मैं अपने घर का खर्चा चला सकता हूं और खुद का खर्चा भी चला सकता हूं। और अपने परिवार का पालन– पोषण कर सकता हूं। संस्थान ने नरेन्द्र को निःशुल्क पाँव लगाकर उसकी जिंदगी को एक नयी दिशा दी है। अपनी नई जिदंगी के लिये वो संस्थान को बहुत – बहुत धन्यवाद देता है। ये दुनिया का ऐसा पहला संस्थान है, जहां बिल्कुल फ्री इलाज होता है। ऐसा संस्थान मैंने कही और नहीं देखा। नारायण सेवा संस्थान का दिल से बहुत – बहुत धन्यवाद।

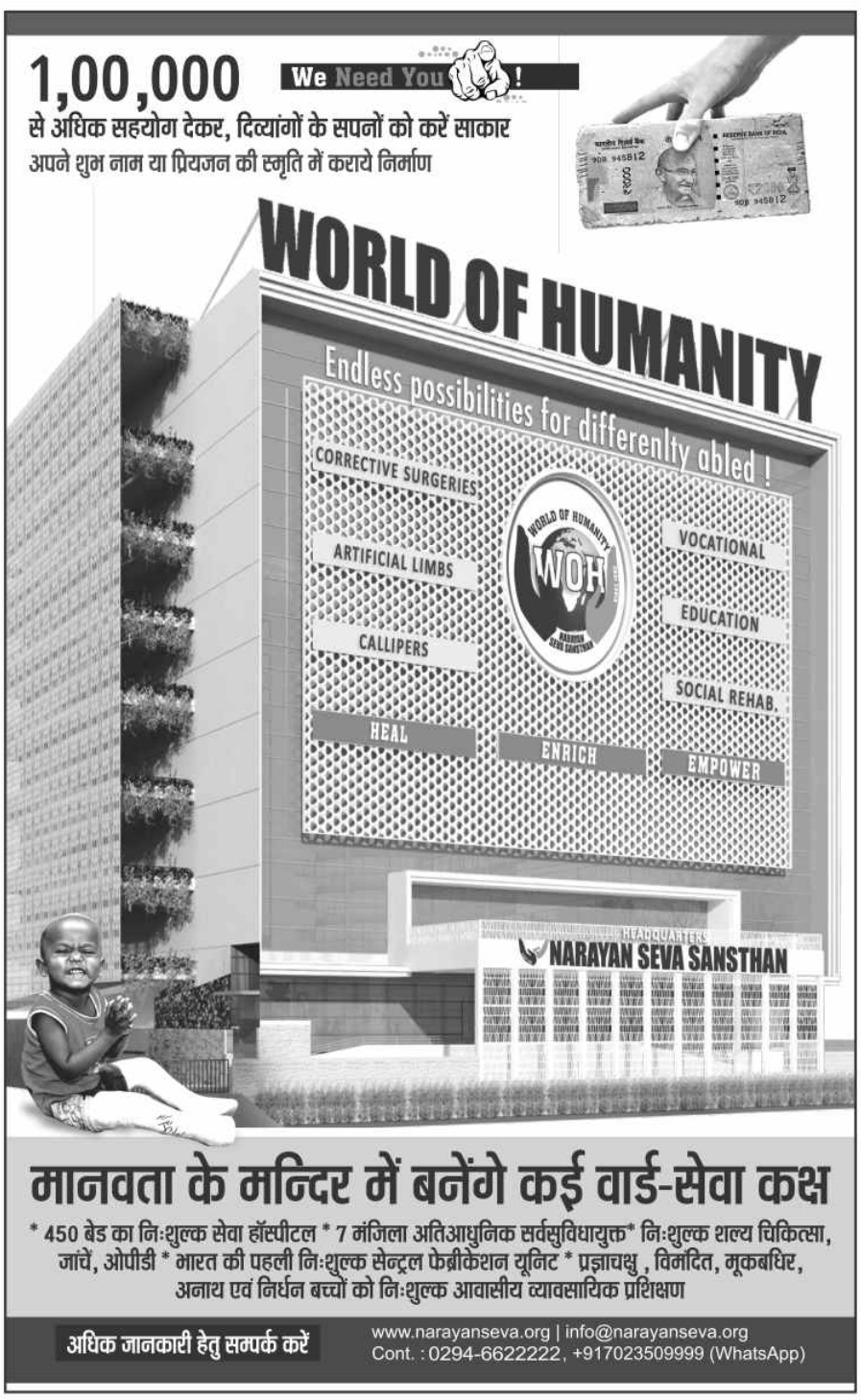

सम्पादकीय

किसी भी बात को कहने के अपने–अपने तरीके होते हैं। बात कहने का ढंग ही व्यक्ति की परवरिश व पृष्ठभूमि का संकेत कर देता है। बात भले ही किसी भी भाषा में हो पर उसकी शब्दावली यदि प्रसंगानुकूल नहीं है तो वह निष्प्रभावी हो जाती है। बात का वजन इसी में है कि वह आगे–पीछे सोच कर, समझ कर कही गई हो। कई लोग बोलते पहले हैं और सोचते बाद में। जब बात मुँह से निकल जाती है तो फिर उस पर सोचने का क्या अर्थ है? वाणी का यही गुण है कि वह मन भी हर लेती है और मन भी भर देती है। कहने का तरीका व शब्दावली यदि सही है तो वह आगे वाले को प्रसन्न भी करती है और प्रभाव भी डालती है। इसके विपरीत यदि बात सही भी है पर शब्दावली व तरीका उचित नहीं है तो वह मन को खिन्न कर देती है। यह हमें निर्णय करना है कि हम प्रसन्नता बाँटें या अप्रसन्नता।

कुछ काव्यमय

वाणी वाणी का अंतर ही,
मन पर असर करेगा।
एक घाव करने वाला है,
दूजा घाव भरेगा।
वाणी की शब्दावली
हो पूरी शालीन।
खुश हो जाए श्रोता
यदि हो वो गमगीन।

अपनों से अपनी बात

सेवा ही बड़ा धर्म

गुरु नानकदेव जी शिष्य मर्दाना के साथ एक गांव में पहुँचे। गांव के बाहर एक झोंपड़ी में कुष्ठ रोगी रहता था। लोग उससे घृणा करते। कोई भी उसे पास नहीं जाता। कभी कोई उसे भोजन दे जाता अन्यथा भूखे रहना ही उसी नियति थी।

गुरु नानकदेव जी झोंपड़ी में गए और पूछा– भाई, हम आज रात तुम्हारी झोंपड़ी में रूकना चाहते हैं? अगर तुम्हें कोई परेशानी ना हो तो। यह सुनकर वह हैरान हो गया, क्योंकि उसके पास कोई आना ही नहीं चाहता फिर ये कैसे उसे पास रूकने को तैयार हुए? वह सिर्फ उन्हें देखता रहा। उसे कोढ़ ग्रस्त अंग में कुछ बदलाव आने लगे।

नानकदेव जी ने मर्दाना को रबाब बजाने को कहा और उन्होंने कीर्तन आरंभ कर दिया। कोढ़ी ध्यान पूर्व सुनता रहा। जब कीर्तन समाप्त हुआ, तो उसने गुरुजी के चरण स्पर्श लिए। गुरु नानकदेवजी ने उससे पूछा– भाई, कैसे हो? गांव के बाहर झोंपड़ी क्यों बनवाई है? उसने उत्तर दिया– मैं बहुत बदकिस्मत हूँ। मुझे कुष्ठ रोग है, कोई मेरे पास नहीं आता। कोई मुझसे बात नहीं करता। अपनों ने भी मुझे घर से निकाल दिया। मैं दुर्भाग्यशाली और धरती पर बोझ हूं। गुरु नानकदेव जी ने कहा– बोझ तुम नहीं वे लोग हैं जिन्होंने पीड़ित पर भी दया नहीं की और अकेला छोड़ दिया। आओ मेरे पास, मैं भी तो देखूँ, हाँ है कोढ़? जैसे ही गुरु नानकदेव जी ने उसे हाथों और पीठ को सहलाया, वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। इस चमत्कार से अभिभूत वह गुरुजी के चरणों में गिर पड़ा।

उन्होंने उसे उठाकर गले लगाते हुए कहा– प्रभु का स्मरण और लोगों की सेवा करो, यही मनुष्य के जीवन का प्रमुख कार्य है। उसे पश्चात् वह अन्य कोढियों की सेवा में लग गया और ऐसी ख्याति पाई कि सभी उसका आदर करने लगे।

– कैलाश 'मानव'

दयालु संत...

एक संत थे। वे जीवन भर निःस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा करते रहे। एक बार देवताओं का एक समूह उनकी कुटिया के समीप से निकला। संत साधनारत् थे। वे साधना से उठे और बड़े ही श्रद्धाभाव से उनकी सेवा की। देवतागण संत की सेवा से अत्यंत प्रसन्न हुए।

देवताओं ने संत से कहा –आपके लोकहितार्थ किए गए कार्यों से हम सभी बहुत प्रसन्न हैं, आप जो चाहें, वह वरदान माँग लें।

देवताओं की बात सुनकर संत विस्मित से हो गए और कहने लगे–मेरी जरूरत की सभी व्यवस्थाएँ तो हैं। अब और क्या माँगू? मुझे तो कुछ भी नहीं चाहिए।

देवताओं ने आग्रह किया, तो भी संत ने कुछ भी माँगने से मना कर दिया, तब देवताओं ने आशीर्वाद दिया और कहा –सदैव दूसरों का कल्याण करते रहो।

संत –यह दुष्कर कार्य मुझसे नहीं हो पाएगा?

देवता–क्यों? यह कोई दुष्कर कार्य नहीं है। संत– मैंने कभी किसी को दूसरा माना ही नहीं। मैंने तो सभी को अपना माना है। इसीलिए यह मेरे लिए दुष्कर कार्य है।

संत की बात सुनकर देवता अत्यंत प्रसन्न हो गए। उन्होंने संत से कहा – आपकी तो परछाई से भी सबका कल्याण होगा।

यह बात भी संत ने एक शर्त पर स्वीकार की। उन्होंने देवताओं से कहा– मेरी परछाई से किसी का भी कल्याण हो, परंतु उस बात का मुझे कभी भी पता ना चले। ऐसी व्यवस्था सदैव रखना ताकि मुझमें कभी यह अहंकार ना हो कि मेरे द्वारा इतने लोगों का भला हो चुका है।

संत की बात सुनकर देवता अत्यंत प्रसन्न हो गए। उन्होंने संत को आशीर्वाद दिया और वहाँ से चले गए।

दुनिया में आज ऐसे ही संतों की जरूरत है, जिनमें पर–कल्याण की भावना के साथ निस्वार्थता और विनम्रता के गुण भरे हों।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश के मन पर अपने पिता की सीख का अमिट प्रभाव था। मदन को भी उसके साथी व्यापारी कहते रहते कि धन्धे में झूठ सांच तो करना पड़ता है, तेरे तो घर का मकान भी नहीं है जबकि सभी व्यापारियों के अपने मकान हैं। कई व्यापारी कम तोलने के लिए तराजू के नीचे चुम्बक चिपका देते थे। मदन को यह कतई स्वीकार नहीं था। वह यहीं कहता कि मुझे उपर के जरबों की चिन्ता है, यदि ऐसा किया तो यहां नहीं तो उपर तो जरबे खाने ही पड़ेंगे।

कैलाश कई बार अपने वालों से पुस्तकें के पैसे भी नहीं लेता। लोग आग्रह करते रहते कि ले लो–ले लो फिर भी वह नहीं लेता तो लोग बिना पैसे दिये ही पुस्तकें ले चले जाते। उसके साथी उसे समझाते कि ऐसा कैसे चलेगा, यही हाल रहा तो एक दिन दुकान बन्द हो जायगी । लाभ नहीं लेना है तो मत लो परन्तु जो मूल लागत लगी है वह तो लो।

उन्हीं दिनों कैलाश को कल्याण के सम्पादक भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार के जीवन से जुड़ी एक घटना पढने को मिली। भाई जी की मुम्बई में पार्टनरि ाप में एक फर्म थी। फर्म का एक छोटे व्यापारी से लेन देन का मुकदमा चल रहा था। पैसा वसूलने व्यापारी के खिलाफ कुर्की आदेश जारी हो गये थे। भाईजी उसे जानते थे, व्यापारी दिल का अच्छा था मगर कुछ मजबूरी रही होगी इसलिये पैसा नहीं चुका पाया। भाईजी उससे मिले और पूछा –तेरे घर पर कोई कीमती सामान हो तो निकाल ले वरना कुर्की में जब्त हो जायगा। उसकी बेटी का कुछ सोना उसके पास रखा था। भाईजी के कहने पर वह सोना घर से हटा दिया।

कुर्की की कार्रवाही हुई तो उसके यहां से कुछ नहीं मिला। भाईजी के पार्टनर को बहुत गुस्सा आया। उसने भाईजी को कहा कि व्यापारी के पास सोना था, किसी ने उसे जरूर बता दिया होगा इसलिये उसने पहले ही हटा दिया। भाईजी से रहा नहीं गया, अत्यन्त सहजता से उन्होंने पार्टनर को बता दिया कि उन्होंने ही उसे सोना हटाने की सलाह दी थी। पार्टनर ने अपना सिर पीट लिया और कहा कि ऐसे तो दुकानदारी कैसे चलेगी। भाईजी ने उसी क्षण कह दिया कि गरीब की आंखों के आंसूओं से ही फर्म चलानी है तो यह दुकान आप ही रखो।

कैलाश के मन को भाईजी की यह सहृदयता भा गई। लोग उसे समझाते तो यही प्रसंग याद कर कर के वह अपने मन को मजबूत करता। दुकान पर बिक्री अच्छी होती थी इस कारण इस तरह की घटनाओं का उसके व्यापार पर खास असर नहीं पड़ता।

अंश - 017

संस्थान द्वारा दिव्यांग दम्पती व बच्चे की मदद

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांग धर्माराम (13) और रमेश मीणा (28) को उनकी विपरीत परिस्थितियों में तात्कालिक मदद पहुँचाई है। एक सप्ताह पहले कानोड़ तहसील जिला उदयपुर (राज.) के तालाब फलां निवासी रमेश पुत्र वाला मीणा का घर आग लगने से स्वाह हो गया था। संस्थान ने अनाज, वस्त्र, कम्बल मसाले आदि देकर उसकी मदद की। रमेश और उसकी पत्नी लोगरी दोनों ही जन्मजात दिव्यांग है। चार बच्चों के साथ गृहस्थी को चलाना, पहले से ही इसके लिए भारी था और अब घर के जल जाने से उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। वहीं मंगलवार को पीआरओ विपुल शर्मा को फुटपाथ पर मिले धर्मा पुत्र कंवरलाल को व्हीलचेयर, कपड़े, बिस्किट एवं राशन देने के साथ उसका सीपी टेस्ट करवाया। इस बालक की दो वर्ष पूर्व बीमारी के दौरान आवाज और आंखों की रोशनी चली गई थी। अब इसके पांव भी नाकाम हो गए है। डॉक्टर्स टीम आवश्यक चिकित्सा के लिए प्रयासरत हैं।

संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने कहा कि विषमता में परेशान दिव्यांगों एवं दुखियों को ज्यादा से ज्यादा मदद पहुंचाने के लिए संस्थान तत्पर है। इस अवसर पर विष्णु शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद जी गौड़, दिलीप सिंह जी, फतेहलाल जी मौजूद रहे।

प्रदूषण के दुष्प्रभाव

प्रदूषण का स्तर इस समय बढ़ा हुआ है जिससे एलर्जी सहित कई समस्याएं व दूसरे रोग बढ़ रहे हैं। जिनको पहले से कोई बीमारी है उनकी समस्याओं को और बढ़ाने का काम भी प्रदूषण कर रहा है। प्रदूषण, फेफड़े ही नहीं, हृदय, किडनी, मस्तिष्क सहित शरीर के विभिन्न अंगों को भी नुकसान पहुंचाता है। इससे बचने के लिए बड़े स्तर पर जहां सामूहिक प्रयासों की जरूरत है, वहीं अपने स्तर पर व्यवहार, आदतों, खानपान और जीवनशैली में जरूरी बदलाव कर प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत बनाएं। शरीर को डिंटाक्स कर भी इसके दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है।

लिव वैल – जब भी प्रदूषण की बात आती है तो सबसे पहले हमारा ध्यान वायु प्रदूषण पर ही जाता है, लेकिन मृदा और जल प्रदूषण भी शरीर में रोगों के कारक हैं। मृदा प्रदूषण से जहां अनाज, सब्जियां , फल आदि विषैले हो जाते है, वहीं प्रदूषित जल, जिसमें मौजूद लेड, आर्सेनिक, कैडमियम जेसे टॉक्सिन विभिन्न रोगों के वाहक होते हैं।

इन रोगों का खतरा – फेफड़े संबंधी बीमारियों के साथ ही हृदय रोग, कैंसर , डायबिटीज जेसे गंभीर रोग भी होने की आशंका होती रहती है। इससे कोशिकाओं में ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इंफ्लामेशन (अंगों में सूजन) होता है। इससे खून का जमना, रक्तचाप का बढ़ना, सीओपीडी, अस्थमा, कैंसर जैसी बीमारियां भी होती है।

पूरे शरीर पर असर – प्रदूषण के लेकर अधिकांशतः यह माना जाता है कि यह केवल फेफड़ो को ही प्रभावित करता है, जो गलत है। दरअसल, यह फेफड़े सहित शरीर के संभी अंगों पर नकारात्मक असर डालता है, जिससे उनकी कार्यप्रणाली प्रभावित होती है।

याद्दाश्त पर भी असर – क्वीसलेंड व कार्नेगी मेलॉन विश्वविघालयों (अमरिका) के शोधकर्ताओं ने 'ब्रेन ट्रेनिंग' फोन ऐप के एक लाख यूजर्स से यह निष्कर्ष निकाला कि प्रदूषण से याद्दाश्त क्षमता प्रभावित होती है। इसके लिए प्रदूषण कण पीएम 2.5 को जिम्मेदार बताया है।

कम उम्र में ब्लॉकेज – हृदय के मामले में प्रदूषण इसकी कार्य क्षमता पर असर डालता है। इससे रक्तचाप, कॉलेस्ट्रोल आदि बढ़ सकते हैं। लगातार प्रदूषण रहने का उम्र पर भी नकारात्मक असर पड़ता है और यह सामान्य से 5–10 प्रतिशत तक प्रभावित हो सकती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

बाबूजी आप तो बता दीजिये। हम बनाके ले आयेंगे। नहीं भाया नहीं, बना बनाया बीस साल पहले का नहीं चाहिये। मुझे तो भये प्रकट कृपाला, दीन दयाला कौशल्या हितकारी, हर्षित महतारी मुनि मनहारी अद्भुत रूप बिचारी। बच्चा चाहिये, उसको पूर्व के.जी. में पढ़ायेंगे, फिर के.जी. में पढ़ायेंगे, पहली कक्षा में जायेगा। पापा में पहली कक्षा में आ गया, दूसरी में आ गया। युवावस्था में क्या हो जाता है? प्रशांत भैया, कल्पना जी उस समय मन में विचार चलने लगा।

कल्पना का विवाह, 20 साल की होने दे, अभी तो अठारह की हुई है। शिविर में जाते रहे। एक सुखद एहसास हर रविवार तीन बजे सुबह भगवान उठा देता। कमला जी पुड़ी, पराठा, आलू की सब्जी, कभी रायता भी, चटनी, नींबू का अचार पत्तल लेना भाई, दूने भूलना मत, और देवेन्द्र भाई चौबीसा जी कई महानुभाव थे। अब जो शिविर उनका वर्णन भाई लोकेश जी करेंगे।

पई दि. 03.01.1988 रोगी सेवा 300, अन्य सेवा 1223

बाघपुरा दि. 10.01.1988 रोगी सेवा–413, अन्य सेवा 1650

टीडी दि.17.01.1988 रोगी–488, अन्य सेवा 1183

कात्याफला 31.01.1988 रोगी सेवा–270, अन्य सेवा 1183

हर साल जनवरी आता, फरवरी आता है, 2 जनवरी भी आता है। अरे! कैलाश जी आपका जन्मदिन भी आता है। क्या फर्क पड़ता है? दो जनवरी को भगवान ने जन्म दिया।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 370 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023